नियम-⑤ 'च्' आगम संधि- [स्वर + छ]

'च्' का आगम

यदि किसी स्वर के बाद 'छ' वर्ण आ जाए तो स्वर और 'छ' के बीच 'च' का आगम हो जाता है-

जैसे- आ + छादन - आच्छादन, शाला + छादन

च्

च् शालाच्छादन

वि + छेद – विच्छेद, परि + छेद – परिच्छेद

च्

च्

प्रति + छाया – प्रतिच्छाया

च्

अनु + छेद – अनुच्छेद

च्

मातृच्छाया – मातृ + छाया, पितृच्छाया – पितृ + छाया

च्

च्

नियम-⑥ 'अहन्' की संधि

(i) अहन्+र
↓
अहो

(ii) अहन्+र से भिन्न वर्ण
↓
अहर्

यदि अहन् के बाद 'र' वर्ण आ जाए तो 'अहन' का 'अहो' हो जाता है और यदि 'अहन्' के बाद 'र' से भिन्न वर्ण आ जाए तो 'अहन्' का 'अहर्' हो जाता है।

जैसे – अहन् + रूप – अहोरूप, अहन् + रश्मि – अहोरश्मि

अहन् → अहो

अहन् + रात्रि – अहोरात्र

अहन् → अहो

अहन् + मुख – अहर्मुख, अहन् + निशा – अहर्निश

अहन् → अहर्

अहन् → अहर्

अहन् + अहन् – अहरह

अहन् → अहर्

नियम-7 [ऋ/र/ष + न → ण]

यदि 'ऋ/र/ष' वर्णों के बाद कहीं भी 'न' आ जाए तो 'न' का 'ण' हो जाता है-

जैसे- ऋ+न → ऋण, तृ+न → तृण, कृष्+ना – कृष्णा,

तृष्+ना – तृष्णा, प्र+मान → प्रमाण, प्र+नाम – प्रणाम

परि + नाम – परिणाम, परि + मान – परिमाण

राम + अयन – रामायण

ण

विशेष – 'रामायण' शब्द में तीन सँधि होती हैं –

(i) दीर्घ स्वर सँधि –

राम + अयन = रामायण

आ

(ii) व्यंजन संधि – राम + अयन = रामायण
↓
ण

(iii) अयादि स्वर संधि – रामै + अन
↓
ऐ राम् आय् अन
↓
आय् रामायण

विशेष – यदि विकल्प में तीनों संधि दे रखी हों तो 'दीर्घ स्वर संधि' को प्राथमिकता देनी है और यदि दीर्घ स्वर संधि न दे रखी हो तो व्यंजन संधि को प्राथमिकता देनी है।

नियम-⑧ त्/द् की संधि-

त्/द् →
- च्/छ् = च्
- ज्/झ् = ज्
- ट् = ट्
- ड् = ड्
- ल् = ल्
- श् = च्छ्
- ह् = द्ध्